सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण	१६५३	१०००
द्वितीय संस्करण	१६६०	१०००
तृतीय संस्करण	१६७१	२०००
चौथा संस्करण	सितम्बर १६६१	२०००
पाँचवा संस्करण	१६६६	५०००
छटा संस्करण	११००	२००३

गुरूदेव महाराज मंगतराम जी की जन्म शताब्दी २४-११-२००३ के उपलक्ष में समता महिला सत्संग, जी- २७/३, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली ने छपाई की सेवा की।

विषय सूची

१) निवेदन	१
२) परिचय गुरुदेव	७
३) महामंत्र मंगलाचरण	१२
४) प्रार्थना	१४
५) सिमरण दीपक	१९
६) सार उपदेश	६०
७) शरनागति	६४
८) आरती	६८
९) समता मंगल	७४
१०) अरदास	७६

निवेदन

यह अनुभवी वाणी मुख वाक अमृत श्री सत्गुरूदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज ने संसारियों के उद्धार हेतु ईश्वरी आज्ञा से उच्चारण फरमाई है। इसके नित-प्रति स्वाध्याय से न केवल मन स्थिर रहता है, बल्कि सुख और शान्ति का अनुभव भी होता है। इस 'सिमरण-दीपक' वाणी का उच्चारण श्री सत्गुरूदेव जी ने जनवरी १९४४ में काहनोवान जिला गुरदासपुर (पंजाब) में एक प्रेमी हकीम जसवन्त राय की प्रार्थना पर किया।

प्रेमी महाराज जी ! रोजाना पाठ के वास्ते

थोडी वाणी अलग गुटके की शकल में होनी चाहिये। जैसे जप जी साहब की वाणी है।

गुरुदेव : प्रेमियों! सांग न बनाओ। दूसरों की नकल क्यों करते हो?

प्रेमी : महाराज जी! आज कल के ज़माने के साथ भी तो चलना है। ऐसी चीज़ हो जो जेब में पड़ी रहे।

गुरूदेव : अच्छा! ईश्वर आज्ञा से जो विचार रात को आयेगा उसे सुबह देख लेना।

उसी रात को दस बजे जब सब प्रेमी चले गये,

तो गुरूदेव ने सेवक भगत बनारसी दास को आज्ञा फरमाई कि तुम भी सो जाओ। रात को जल्दी उठना होगा। प्रेमी जसवन्त राय का प्रेम पूरा करना है। आज्ञा पाते ही भगत जी सो गये। रात दो बजे गुरुदेव ने स्वयं उनको जगाया और कापी कलम निकाल कर लिखने की आज्ञा देते हुए फरमाया :

प्रेमी ! ऊपर 'सिमरण दीपक" लिखो। तत्पश्चात् गुरूदेव ने वाणी का उच्चारण स्वयं समाधि स्थित होकर करना शुरू कर दिया। भगत जी साथ-साथ लिखते गये।

दूसरे दिन प्रातः चाय सेवन के पश्चात् रात की लिखी वाणी सुनाने का आदेश दिया। सुनने के बाद फरमाया :

गुरूदेव प्रेमी ! क्या समझा है?

भगत जी महाराज जी! अगर चित्त देकर केवल इन वचनों को विचारा जाये तो यह ही काफी हैं। मगर इतना पढ़ने के बावजूद मन नहीं मानता।

गुरुदेव : प्रेमी ! लाखों पद ईश्वर महिमा के, वैराग के, अनुराग के, साधना के, प्रेम के, विश्वास के महापुरुषों ने उच्चारण फरमाये हैं उन में से अगर कोई

एक पद भी चित्त वृत्ति पकड़ ले तो मन रूपी दुर्मति को त्याग करने के यतन में लग जाता है। किसी को वैराग्य के पद अच्छे लगते हैं, किसी को प्रेम अनुराग के, किसी को साधना के, हर एक जीव के वास्ते सत्पुरुष इखलाकी, रुहानी खुराक छोड़ जाते हैं। लोभ मोह में फंसा हुआ जीव बड़ी मुश्किल से सत्मारग की सूझ प्राप्त कर सकता है।

माया भरम विकार में नित्त ही जीव भरमाये।
"मंगत" भरमन तब मिटे जब सत नाम ध्याय ।।

(भगत बनारसी दास - संगत समतावाद)

श्री सद्गुरूदेव मंगतराम जी महाराज

परिचय गुरुदेव

सत का मण्डन पाखंड

खण्डन सत पुरुष जग आये,

पाप विरवाद का नाश करन ते

केते दुःख उठाये।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर

सब ही सन्त सरूप,

"मंगत' गुर्मुख साधू आया

धर नारायण का रूप ।।

(ग्रंथ श्री समता प्रकाश)

पूज्य पाद श्री सद्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी आधुनिक युग के सिद्ध योगी हुए हैं। आपका आगमन २४ नवम्बर १९०३ तदानुसार ९ मघर सम्वत् १९६० मंगलवार के दिन शुभ स्थान गंगोठिया ब्राह्मणा, जिला रावलपिंडी (पाकिस्तान) के एक कुलीन ब्राह्मण (कसाल) परिवार में हुआ, आप बाल ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी, परम त्यागी और ब्रह्म निष्ठ आतम दर्शी महापुरुष थे। १३ वर्ष की छोटी सी आयु में ही आप को आत्म साक्षात्कार हो गया था। तत्पश्चात् लगभग अठारह साल तक आपने गुप्त रूप में कठिन तपस्या की। उस के बाद

जगह-बजगह का भ्रमण करके जिज्ञासु जनता का उद्धार करते रहे। भ्रमण के अन्तर्गत आप ने संसारियों के कल्याण के लिए अनुभवी वाणी और अमृत वचन उच्चारण फरमाये। एक पवित्र जीवन का आदर्श आप ने जनता के सन्मुख रखा, जिस में केहनी, रहनी एक समान थी, जिस में न किसी भोग सामग्री की लालसा, न पैसे का मोह, न मान बढ़ाई की इच्छा थी। आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति से सम्बन्ध रखने वाले कई विषय हैं जैसे सत क्या है, असत क्या है, ब्रह्म जीव और प्रकृति का क्या भेद है। कर्म और नेहकर्मता,

भक्तिज्ञान योग, सिमरन, ध्यान इत्यादि। इन सब तथा अन्य कई विषयों पर इन पावन महापुरुष ने बड़े शुद्ध यथार्थ ज्ञान युक्त, निष्पक्ष विचार परगट फरमाये हैं। सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत सिमरन यह पाँच मुख्य साधन आत्मिक व सामाजिक तरक्की के आपने जनता के सामने रखें।

इस पावन सत्पुरुष की वाणी बड़े गूढ़ से गूढ़ भावों को अति सरल और सुन्दर भाषा में पेश करती है। यह मूल वाणी ग्रंथ श्री समता प्रकाश के रूप में संकलित हो चुकी है। इस के अतिरिक्त आप के प्रवचन

ग्रंथ श्री समता विलास में छपे हैं। इन का मनन और जीवन में निध्यासन बेअन्त ठण्डक, शुद्धता और प्रकाश के देने वाला है।

४ फरवरी १९५४ वीरवार के दिन ५० वर्ष की आयु में आप गुरु नगरी अमृतसर में इस नश्वर शरीर का त्याग करके ब्रह्म तत्त में लीन हो गये।

ॐ

महामंत्र

ॐ ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजन्मा

अद्वैत पुरखा सरबव्यापक कल्यान मूरत

परमेश्वराय नमस्तम् ।।

मंगलाचरण

नारायन पद बंदिये ताप तपन होय दूर ।

नमो नमो नित चरन को जो सरब आधार हुजूर ।।

हिरदे सिमरो नाम को नित चरनी करो डंडोत ।

सत शरधा से पूजिये रख सतगुर की ओट ।।

दुविधा मिटे मंगल होय जो चरण कंवल चित धार ।

रिध सिद्ध आवे घर माहीं पावें जै जैकार ।।३।।

साचा ठाकर सरब समराथा अपरम शक्ति अपार ।

"मंगत" कीजे बंदना नित चरनी बलिहार ।।४।।

सत भारग सोझी मिली तन मन भया निहाल |

गवन मिटी संसार की सतगुर मिले दयाल ||५||

बार बार करूँ बन्दना सतगुर चरनी माही ।

"मंगत" सतगुर भेंट से फेर गरभ नहीं आई ।।

प्रार्थना

तूं दीन दयाल सरब का स्वामी ।

पतित पावन तूं परम सुख धामी ।।

अनन्त सरूप शक्त अनन्त ।

सरब पसरया तूं ही भगवन्त ।।

अनन्त महिमां तेरा विवेक ।

अनन्त सरूप तेरा प्रभ एक ।।

त्रिण त्रिण अन्दर तूं समाया ।

अखण्ड सरूप तेरा प्रभ राया ।।

अकश कथा विज्ञान सरूप।

परम पुरख तूं अत अनूप ।।

जब देखूं प्रभ अन्तर माहीं ।

तू एक समाया पार गुसाई ।।

अपना कौतक आप बिस्तारी ।

अचरज लेख तेरा पार मुरारी ।।

नित ही नित करूं अरदास ।

सत ठाकुर में करूं निवास ।।

तूं रख्यक सरब जग देवा ।

पल पल मांगू निर्मल सेवा ।।

दात करो अपनी प्रभ राये ।

तेरी कथा मन मांही समाए ।।

नित ही बाँछू चरनी धूड़ ।

दीन दयाल समरथ हजूर ।।

अन्तर बाहिर तेरा जस गाऊँ ।

दिवस रैन तेरी कीरत ध्याऊँ ।।

तूं समरथ ठाकर बे परवाहे ।

बारम्बार महिमां चित्त गाये ।।

नाम ध्यान पाऊ तत्त मूल।

तू व्याप रहया सूक्षम असथूल ।।

प्रभु दाते तेरी हू सरना ।

तू ठाकर है कारन करना।।

अत वडयाई तेरी प्रभ एक ।

कथ कथ थाके सिद्ध मुनी अनेक ।।

राखनहार तू आप दयाल |

सरब जियां पर होयें किरपाल ।।

अपने भाने तूं करे नित दात।

निर्मल ध्यान तेरे चरन समात ।।

परम प्रीत रहे चित्त माहीं ।

तूं ठाकर परम सुख थाई ॥

नित हू मैं सरनागति,

पद परम पुरख प्रभ राये ॥

"मंगत" की सुन बेनती,

नित प्रभ जी होत सहाये ॥

। सिमरन दीपक ।

आत्म सरूप सिमर मन माहीं ।

दुबिधा दूर मंगल को पाई ।।१।।

जग जीवन की यह निर्मल सार ।

आत्म तत्त का जो मिले विचार ।।२।।

महा बिकराल दुर्मत जाए रोग ।

निर्मल शांत का पाए संजोग ।।३।।

वासना कर्म का नासे ताप ।

नेहकर्म सरूप आत्म नित जाप ।।४।।

जीवन तत्त चेतन परगास ।

नित आनन्द सरूप अबनास ॥५॥

सत् शरधा से हीये चितार ।

परमानन्द तत्त जोत निरंकार ॥६॥

घट घट व्यापक सरब भरपूरे ।

नित रखयक सत् रूप हुजूरे ॥७॥

निर्मल प्रीत से सदा ध्याओ ।

डोलन त्याग नेहचल गत पाओ ॥८॥

कर्ता हर्ता सरब सुख दाता ।

अबगत रूप भज पुरख विधाता ॥९॥

नित नेहथांवा मन आवे जाए।

नाना भोग करम लिपटाए ||१०||

आसा मनसा अत धीरघ ताप।

अनर्थ कल्पना बहु मांत चित थाप ॥११॥

एक पलक न आवे धीर।

करम वासना देवे अत पीड ||१२||

मोह माया में जले दिन रात |

बिन तत्त ज्ञान न मिटे सन्ताप ||१३||

उज्जवल नीती वे निर्मल करम |

आत्म पूज जग जीवन धरम ||१४||

सत साधु मिल सूझ विवेक।

दुबधा त्याग सिमर प्रेम एक ॥१५॥

नाम जपत सब कलह विनास।

अखंड सरूप तत पाएँ परगास ॥१६॥

निर्भय धाम परस सत ठौर।

एक नाम नित जाप हजूर ॥१७॥

प्रभ की आज्ञा मन माही विचार |

जो वरतावे सो सुख कर धार ॥१८॥

साची भगती अन्तर आराध।

पल पल निर्मल नाम को साथ ॥१९॥

तन मन धन सरब का दाता ।

पुरन पुरख सरब घट जाता ॥२०॥

नाम का सिमरन देवे चित धीर ।

काल करम की हरे तकसीर ॥२१॥

सरब आनन्द सरब का धाम ।

मिल सतगुरु जप निर्मल नाम ॥२२॥

नाम ध्यान सब गुण की खान ।

अन्तर परस तत्त शब्द निर्वान ॥२३॥

असल भरम जाए दूजा भाओ ।

एको एक सरब लख पाओ ॥२४॥

एक नाम पाए जीवन आधार।

"मंगत" जप जप बारम्बार ।।२५।।

नाम सिमरन अत निर्मल धन।

साची भगती सब मेटे विघन ||१||

गुरमुख मन में पाई जयकार |

सिमर सिमर साचा करतार ।।२।।

अत ही महिमा मन रही समाए।

बिन प्रभ रूप सब काल दिखाए ।।३।।

आवे जावे ये करम का जाल।

साचा नाम जप दीन दयाल ।।४।।

देह अभिमान त्याग दुख मूल ।

साचा ठाकर पलक ना भूल ।।५।।

कर्ता भाओ त्याग अन्धकार ।

प्रभ की आज्ञा पल पल विचार ।।६।।

सकले दोष मन के होए नास ।

अन्तर गत पाएँ आत्म परगास ।।७।।

साचा ठौर जग जीवन रूप ।

परस नारायन अत शक्त अनूप ।।८।।

मन का भरमन जो अत संताप ।

नाम जपत सुख सहज समात ।।९।।

ऐसा नाम ध्याओ नित नीत।

साध वचन राखो परतीत ॥१०॥

भव मारग में केवल यह सार।

साची भगत प्रभ हीये चितार ॥११॥

बिन सत नाम मन अधिक भ्रम थापे।

तत्त विसार नित करम गत जापे ॥१२॥

करमफल इच्छया में निश्चय नित धारी।

भोग सोग में अत पाए खुवारी ॥१३॥

आस आस में जन्मे मरे।

काल चक्कर में रूप बहु धरे ॥१४॥

यह ही रचना है सकल संसार।

पाए ना धीर यह जीव गँवार ॥१५॥

राजे राणे गुनी गुनवन्त।

चार खानी सब जीव भरमन्त ॥१६॥

आतम सूझ केवल तत सार।

अखंड अद्वैत पुरख निर्धार ॥१७॥

जाको परस पायें प्रसन्नता।

एको देखे रूप अनन्ता ॥ १८ ॥

जलन मिटे मन पावे शांत।

आत्म ज्ञान सब हरे भ्रांत ॥१९॥

निर्भय जीवन अन्तर मुख ध्यान ।

पायो ठाकर आनन्द की खान ।।२०।।

साचे नाम का गायो गीत ।

मन में राख पूरन परतीत ।।२१।।

आत्म तीर्थ में करो अस्नान ।

अन्तर परसें तत्त शांत निर्वान ।।२२।।

नाम आधार हो नाम परायन ।

नाम की महिमा करें चित्त गायन ।।२३।।

तृष्णा नाश होवें निर्वास ।

घट घट देखें प्रभ परकास ।।२४।।

जानन योग केवल इक नाम ।

"मंगत" सिमर के ले बिसराम ।।२५।।

सत साजन सत कार कमाओ।

प्रभ अपने को पल पल ध्याओ ।।१।।

भरमन त्याग घट अन्तर समाई ।

तत गत रूप की लखे प्रभताई ।।२।।

वासना कर्म से भयो विरक्ता ।

ज्ञान विज्ञान सुख सहज संजुगता ।।३।।

विरत रहित मन निर्मल भयो ।

साची शोभा प्रभ की लख लयो ।।४।।

अचरज कथा नहीं पारावार ।

अकथ ज्ञान अलेख निर्धार ।।५।।

जिस जन घट की सोझी पाई ।

सरब का ठाकर घट माहीं दरसाई ।।६।।

भगती प्रेम से पायो विश्वासा ।

दुर्मत त्याग लियो इक नाम भरवासा ।।७।।

मन करम देही से उपरस होई ।

साचे नाम की कथा परोई ।।८।।

उठ बैठत प्रण एको धारी ।

पलक ना विसरे सत् रूप मुरारी ।।९।।

अनन भगत से मन रीझावे ।

साचा शब्द चित्त माहीं कमावे ॥१०॥

दूजा विसरे इक सोझी पावें ।

चंचल त्याग मन नाम समावे ॥११॥

प्रेम खुमारी में रहे मतवाला ।

जप जप जीवे इक नाम दयाला ॥१२॥

और आस ना मन में रिहाई ।

निर्मल नाम इक सार कमाई ॥१३॥

हंग विकार जाए भ्रम मूल ।

एको देखें सूक्ष्म अस्थूल ॥१४॥

सत सील चित भाओ निष्कामा ।

शब्द अखंड में ले विसरामा ।।१५।।

काम क्रोध चित भरमत टारी ।

निमख निमख प्रभ नाम चितारी ।।१६।।

सत सिमरन में मन रहे समाई |

कथा बिस्माद घर माहीं लखाई ।।१७।।

ज्ञान विज्ञान तत्त भयो परगासा ।

निर्मल भगती में लियो निवासा ।।१८।।

अन्तर चानन आत्म सूझा ।

भाओ भगत में पाई पूजा ||१९||

सब कुछ तिस से जानन पाया।

सरब में पसरयो पूरन प्रभ राया ॥२० ॥

देह मण्डल की गति विचारी।

अचरज महिमा घर लखी मुरारी ॥२१॥

सब में व्यापक पर रहे अलेपा।

पार पुरख का अपरम लेखा ॥२२॥

सकल आकार माया रचनाई।

पांच भूत का खेल दिखलाई ॥२३॥

साचा स्वामी घट रहे न्यारा।

जिस सूझे तिस भाग अपारा ॥२४॥

तत गत सूझ मन भयो लवलीना ।

"मंगत" ठाकर सरब घट चीना ।।२५।।

देह मन्दिर में भयो उजियारा |

नेहचल बुद्धि लखे ज्ञान आपारा ।।१।।

आतम जोत शब्द निर्वानी ।

काया कोट में करी पछानी ।।२।।

अन्तर सुरती आकाश समाई ।

शब्द पुरख की शोभा पाई ।।३।।

महिमा गाए के भई निहाल |

अपना आप पाए रूप अकाल ।।४ ।।

देह इन्द्री मन से अलेपा ।

शबद सरूप पाए पुरख अलेखा ।।५।।

केवल सुरती सत गती विचारे ।

चेतन परगास सरब उजियारे ।।६।।

तिस उजियारे में रहे लवलीना ।

काल करम का ताप होए छीना ।।७।।

जाप अजपा नित नित जापे ।

करम त्याग नेहकरमत थापे ।।८।।

वासना त्याग अकल्पत होई ।

आतम ध्यान में सुरत समोई ।।९।।

काल जाल सकल दिखलायो।

अपनी भरमन का लेख लखायो ॥१०॥

भरमन त्याग स्वतन्तर भयो।

केवल आतम सरब दरसीयो ॥११॥

एको देव सरब तिस पूजा।

परम पुरुष सरब गत सूझा ॥१२॥

अकथ कथा मन माहीं कथाए।

प्रभ की महिमा नहीं वरनी जाए ॥१३॥

अन्तर में अन्तर सुख पेखे।

दीन दयाल की महिमा लेखे ॥१४॥

देह त्याग के भयो निरधार।

तिसजन लागे नहीं करम विकार ॥१५॥

नित सुतन्तर नित अतीता।

अपना आप नित जपे पुनीता ॥१६॥

दूजा भाओ सब कल्पना टारी।

शब्दे शब्द मिल शोभा विचारी ॥१७॥

अन्तर इक बाहिर इक देखे।

एको एक सरब करे लेखे ॥१८॥

वासना नास मन भयो निर्वाना।

नेहकरम सरूप पायो शब्द धयाना ॥१९॥

अचरज लीला आपार समाई।

रचक महमा नहीं वरनी जाई ॥२०॥

नित आनन्द सरब परकाशा।

सिमर स्वामी अजर अबनाशा ॥२१॥

नित नित कीरत तिस की सुझे।

अनन्त शकत को पल-पल पूजे ॥२२॥

महा ज्ञानी सो तत्त- बेत्ता।

आतम ज्ञान पायो अकथ अलेखा ॥२३॥

तिस की गत तेई जन जाने।

अपना आप सरब रंग माने ॥२४॥

द्वैत भरम सब गयो गुबारा ।

"मंगत" पायो तत्त रूप अपारा॥२५॥

शब्द तत्त में सुरत समाई ।

तृश्ना जाल रह्यो भरम ना काई ॥१॥

सहज सुभाए निज रूप गुन गावे ।

अपार महमा मन माही लखावे ॥२॥

अमरत पीके तृपत चित्त भयो ।

काल करम का संसा गयो ॥३॥

अकरम सरूप जोत निर्वानी ।

निज सरूप पायो परम निधानी ॥४॥

नित अतीत नित निरवासा ।

अभय गत रूप नित परगासा ।।५।।

अपना आप तत्त भेद लखायो ।

आवागवन का चक्कर मिटायो ।।६।।

देह अन्तर शब्द तत्त बोले ।

सुरत अडोल होए रसना तोले ।।७।।

योग आरूढ़ तत्त समता बूझे ।

कर्म का खेद पलक नहीं सूझे ।।८।।

नित निर्द्वन्द नित निरधारा ।

निज सरूप पायो अपरम अपारा ।।९।।

एक ध्यान सुरत नित राखे।

महा परसाद शब्द रस चाखे ॥१०॥

इन्द्री विकार नहीं चित्त को छेदे।

अवगत शब्द में सुरता बेधे ॥११॥

दूजा भाओ नहीं व्यापी काला।

सरब व्यापक निज रूप घट भाला ॥१२॥

नित नित ताँ में सुरत समाई।

एको एक सरब दरसाई ॥१३॥

तृश्ना भरम नहीं अन्तर व्यापे।

शब्द आनन्द में सुरता थापे ॥१४॥

सुन्न महासुन्न के परले पार।

तत्त निर्वान घट कियो विचार ॥१५॥

केवल प्रीत मन पाई परतीता।

आलख शब्द जप पुरख पुनीता ॥१६॥

देह कोट से भिन्न कर जाता।

साखी रूप तत्त शब्द पछाता ॥१७॥

नित अजन्मा नित निराकारा।

तत्त सरूप पायो अपरम अपारा ॥१८॥

बिस्माद कथा में मन गलताना।

अन्तर पायो सहज ध्याना ॥१९॥

त्रैगुन मनसा सकल निवारी |

आलख शब्द परस निरधारी ।।२०।।

मन इन्द्री से नित नयारा ।

गुनातीत तत्त शब्द विचारा ।।२१।।

तत्त विचार के निर्भय समाई ।

अपनी पूजा आपे पाई ।।२२।।

अखंड अदवैत नित असंगा ।

सरब सरूप शबद निरद्वन्दा ।।२३।।

ताँ में सुरती लीन समाई ।

दूजा भाओ माया विसराई ।।२४।।

अचिन्त सरूप आतम घर पूजा ।

"मंगत" सरब सरूप नारायन सूझा ।।२५।।

द्वन्द करम नहीं चित्त को छेदे ।

शब्द ध्यान हरे सब खेदे ।।१।।

हान लाभ सब दूषना टारी ।

वीतराग पायो पुरख मुरारी ।।२।।

सरब का साखी नित परगासा ।

सरब आधार पुरख निरवासा ।।३।।

सरब परकिरती का जीवन जोई ।

सरब ईश तत्त शबद लखोई ।।४।।

आनन्दखानी सम परकाशा ।

अनादी सरूप निज आतम भासा ।।५।।

अन्तर महमा अचरज पाई।

कथ कथ लीला अगोचर ध्याई ।।६।।

सिमर सिमर तत्त रूप अखंडा ।

आतम जोत सरब परचंडा ।।७।।

सदा अतीत सदा निरदोखा |

नित आनन्द तत्त शब्द अनूपा ।।८।।

नित ध्याओ नित गुन गायो ।

सरब निधान निज रूप लखायो ।।९।।

आपामती गई भ्रम छाया ।

घर में केवल सत रूप लखाया ।।१०।।

सरब आद सनातन जोई।

अखंड शब्द तत्त रूप लखोई ।।११।।

परे परेरे सो ही देखा ।

घट घट अन्तर सोही पेखा ।।१२।।

सरब ज्ञाता सरब आधारी।

निज सरूप पायो शब्द आपारी ।।१३।।

पल-पल सुरती तिस में खेले ।

निर्भय धाम में आपा मेले ।।१४।।

आकार विरत से भयो अलेषा ।

निराकार का पायो विदेका ||१५||

निरविखाद तत्त शब्द अबनाशी ।

अनन्त सरूप सरब परकाशी ||१६||

एह बिध रहनी जिस जन पाई ।

आलख आपार घर माहीं ध्याई ||१७||

सुन्न कपाली नाद किलकारे ।

महमा आपार नहीं जाई विचारे ||१८||

पद निरवाच शूनियंग कारा।

सरब कल्यान तत्त शब्द आपारा ||१९||

चेतन परगास निज आतम देवा ।

सतगुरु सेव पाया तत्त भेवा ।।२०।।

नित अकल्पत नित शान्त समाई ।

शब्द को पूज परमागत पाई ||२१||

तृश्ना काल चक्कर भयो नासा।

सर्वाजीत पायो प्रभु अबनासा ||२२||

तत्त अदवैत सरबगत पूरा।

सरब के अन्तर रहे भरपूरा ||२३||

अन्तर में पाई परसन्ता ।

परमानन्द इक चित्त जपन्ता ।।२४।।

अती पुनीत तत्त शब्द निज देवा ।

"मंगत" भाग से पाई ये सेवा ।।२५।।

एको ठाकर सरब समाई ।

सरब जगत तिस की प्रभताई ||१||

ऐसी महमा करो विचार |

भव दुस्तर से उतरें पार ।।२।।

अकथ अगैह अलोक अकाला ।

अजय अभय सरब मूल दयाला ||३||

सरब आधार सरब परकास ।

सरब सरूप तत्त आतम निर्वास ।।४।।

अनगिनत महमा नहीं पारावार।

साखी पुरख सिमर निरंकार ।।५।।

तत्त गत अपना रूप पछान।

भरम माया सब त्याग गुमान ||६||

अपनी कल्पत आप निवार।

अपना रूप खोज निरधार ।।७।।

दवन्द जाए सब करम का खेदा।

एको परस तत्त शब्द अभेदा ।।८।।

निर्मल जुगती अन्तर धार।

जीवन तत्त करो विचार ।।९।।

पांच तत्त देही का कोट ।

तिस में पेख अब निर्मल जोत ॥१०॥

सो ही रूप सरूप आपारा ।

तिसको सिमर पावें जैकारा ॥११॥

साचा सिमरन साचा ये ज्ञान ।

साची पूजा साचा ये ध्यान ॥१२॥

ज्ञान विज्ञान से पूजो सत देवा ।

मिल सतगुरु पाओ निर्मल सेवा ॥१३॥

सिद्ध मुनी तपीशर ध्यायें ।

देव अवतार नबी जस गायें ॥१४॥

अन्तर सो बाहिर भी सोई ।

अन्तर दृष्ट हो भेद लखोई ।।१५।।

भ्रम अगन होवे चित्त नास ।

अन्तरमुख सतनाम उपास ।।१६।।

खुले कपाट चानन घर देखें ।

एको स्वामी सरब घट लेखें ।।१७।।

सरब ज्ञान की सार लखायें।

साचा साहिब घर परगट ध्यायें ।।१८।।

सत पुरुषारथ ये जीवन सार ।

साचा नाम जप बारमबार ।।१९।।

नाम जपत अगम कला परगासी ।

देह मन्दर में मिले अबनासी ॥२०॥

सेव सेव पायो सुख पूर।

अबगत शोभा सतनाम हजूर ॥२१॥

साध चरन से जाउं बलिहार ।

जा से पाऊँ सतनाम विचार ॥२२॥

हिरदे अन्दर प्रीत कमाऊँ ।

सरब जीयाँ की सेव लखाऊँ ॥२३॥

सरब स्वामी घट में दरसाये ।

पूरन भाग सत धाम समाये ॥२४॥

जाँ से आये ताँ कियो बिसरामा।

"मंगत" पद निर्वान लखा निज धामा ॥२५॥

निर्भय धाम की रसना खाई।

भरम वासना से मन तृप्ताई ॥१॥

भव मारग सब पूरन भयो।

आलख पुरख शब्द लख लियो ॥२॥

अन्तर ध्यान में शून समाई।

परमानन्द केवल दरसाई ॥३॥

सकल मनोरथ की एको सार।

सकल यतन का निरना आपार ॥४॥

मन सिमरे सतनाम हजुर।

भरम माया होवे दुख दूर ॥५॥

निर्मल प्रीत से नाम कमाओ।

साची सीख जगत में पाओ ॥६॥

नाम बिना मन नित डोलावे ।

जेती घाले एता दुख पावे ॥७॥

ओढक चले जग से निरासा ।

करम भोग नहीं मिटे पियासा ॥८॥

सतपुरुषों की सीख चित्त पेख ।

निर्भरू रूप नारायन लेख ॥९॥

सकले संकट पल होएँ नास ।

साची प्रीत जपें अवनाश ।।१०।।

देही सुख त्याग गुबार ।

पर उपकारी जीवन धार ।।११।।

देह के सुख छिन नाश हो जाएँ।

राजे राने अन्त पछिताएँ ।।१२।।

साचा सुख प्रभ रूप पहचान ।

पुरख अविनाशी तत्त निर्वान ।।१३।।

अन्तर बाहिर जो नित रखवारी ।

सिमर दयाल तत्त किरपा धारी।।१४।।

झूठी आसा करम का भोग ।

आवागवन का दे संजोग ।।१५।।

साचा नाम अन्तर मन राख।

तृपत समायें सुन निर्मल साख ||१६||

मारग ज्ञान में उठ के जाग।

पूरन प्रभु का पाओ अनुराग ||१७||

मन निर्मल इक नाम से होए।

गुरमुख साजन जो सार परोए।।१८।।

अमरत रसना केवल इक नाम ।

हरजन सिमर के ले बिसराम ।।१९।।

साखी जात होई परगास ।

अन्तरमुख में लियो निवास ॥२०॥

जगत संग्राम से विजय लखाई ।

मूल पहचान के मूल समाई ॥२१॥

गाओ कीरत प्रभ पारगरामी ।

मिले संतोख जप अन्तरयामी ॥२२॥

सरब सिद्धान्त सरब की सार ।

केवल नाम प्रभ हीये चितार ॥२३॥

साची सेवा नित सतसंग प्रीती ।

पल पल परसो तत्त ज्ञान की नीति ॥२४ ॥

मारग ज्ञान विचार के,

नित सतनाम में रहो परबीन।

"मंगत" सिमरन दीपक उजाला करे,

सब भरमन होए चित्त छीन ॥ २५ ॥

(ग्रंथ श्री समता प्रकाश)

सार उपदेश

मान त्यागी जग को जीते,

माया त्यागी देसा ।

मोह त्यागी पाए वैरागा,

तत्तरूप करे परवेसा ॥१॥

काम त्यागी प्रभ रसना पीवे,

चित्त सहज समाध पछानी ।

लोभ त्यागी पाए छतर संतोखा,

सतनाम की सूझ बखानी ॥२॥

क्रोध त्यागी प्रेम को परसे,

सबसे साँझ बनाई ।

पर का कष्ट हरे दिन रैना ।,

सत मारग धरम लखाई ।।३।।

पांच विकार महा दुखदाई,

जले सकल संसारा ।

परमारथ परतीत बिन,

नहीं जीव पावे निस्तारा ।।४।।

जेते दोख जोई जन त्यागे,

सो एता सुगड़ सुजाना ।

मारग उन्नती में सो लागा,

जग जीवन सार पहचाना ।।५।।

सतगुर सीख में निश्चा राखे,

सब मन के भरम निवारे ।

झूठ देही की ममता त्यागे,

नित सरजनहार चितारे ॥६॥

पाँच विषय का मूल विनासे,

जब आतम तीरथ नहाई ।

दुर्मत त्याग सुख सहज समाए,

परम गती सो पाई ।।७।।

नित ही जीवन करो सुतन्तर,

सत तत्त रूप पछानो ।

"मंगत" अन्तर होए परगासा,

पद परस शांत निर्वानो ।।८।।

।। शरनागति ।।

एको दाता परमेश्वर मेरा,

जो संकट सकल निवारी ।

नित बलिहार जाऊं तिन साजन,

जिन निर्मल प्रीत विचारी ।।१।।

नाम रत्ते सो जन वडभागे,

नित निर्भय धाम समायें ।

तिन की कीरत दुर्लभ जग में,

जो शोभा प्रभ की गायें ।।२।।

अगन सरूप ये जगत का मारग,

प्रभ भगत ठाँड वरताई ।

पूरन करमी साजन भये,

जिन रसना प्रेम की खाई ॥३॥

निर्मल चित्त नित नाम में लागे,

तृपत घर कीना वास ।

सो गुरमुख नित प्रेम रंगराते,

नहीं बौहड़ गवन पाएँ फाँस ॥४॥

सत मारग में राखी प्रीती,

सत ठाकर सिमर अखण्डा ।

जनम मरन का मिटे बखेड़ा,

पद पाइये परमानन्दा ।।५।।

गुनी मुनी नित लेख विचारें,

प्रभ कीरत सार लखायें ।

वडभागी सो रसना खायें,

जो जीवित आस बुझायें ।।६।।

नित ही आज्ञा मन में राखें,

अपना आप गँवायें ।

नाम कीरत में मर के जीवें,

तब निर्भय धाम समावें ।।७।।

दुर्मत रोग जाए अत संकट,

जीव अभय पद वासी ।

धन्न साजन जिन कार पछानी,

प्रभ चरन में लियो निवासी ॥८॥

अपने जन को सुकृत कीना,

नित पूरन रूप मिलाये।

परगट छबी करी घट भीतर,

नित सिमर सिमर सुख पाये ॥९॥

अबगत धाम परापत पायो,

आद पुरख अवनाशी ।

"मंगत" चरन कंवल में लागा,

नित शोभा चित परगासी॥१०॥

।। आरती ।।

तू पार ब्रह्म परमेश्वर,

तीन काल रछपाल ।

नित पाऊँ शरनागति,

सत चरण कँवल दयाल ||१||

तू नित पतित उद्धार है,

पूर्ण प्रभ जगदीश ।

मोह माया संकट हरो,

दीजो ज्ञान संदेश ||२||

नित ही तेरे चरण की,

मन में रहे प्रीत।

तू दाता दातार है,

पुरुषोत्तम सुख रीत ॥३॥

पवन पानी बैसन्तर,

धरती और आकाश।

सबको सिरजनहार तू,

आद पुरख अबनाश ॥४॥

घट घट व्यापक तू परमेश्वर,

सरब जियां आधार।

अनमत कूकर को राख लें,

कृपा निद्ध करतार ।।५।।

काल कर्म जाए दूष्णा,

खल बुद्धि हरो अज्ञान ।

सत श्रद्धा पाऊँ चरण की

अखण्ड प्रेम चित्त ध्यान ||६||

दीनानाथ दयाल तू,

पल पल होत सहाय ।

कीरत साचे नाम की,

मन तन आए समाये ।।७।।

अन्तर का सब खेद हरो,

दीजो सत विश्वास ।

शरणागत हूँ मंद मति,

घट अन्तर करो परकास ।।८।।

अन्तरगत सिमरन करूँ,

निरन्तर धरूँ ध्यान ।

घट घट में दर्शन करूँ,

आद पुरुष भगवान ।।६।।

तू साचा साहिब सरब प्रकाशी,

शब्द रूप अखण्ड ।

गुनी मुनी उस्तत करें,

तन मन पाएँ आनन्द ॥१०॥

होवें दयाल तू सत परमेश्वर,

देवें धीर अपार।

निमख निमख सिमरन करूँ,

चित्त चरण रहे आधार ॥११॥

काया अन्तर परतक्ष होवें,

नाद रूप बिसमाद।

पल पल कीजूं आरती,

तन मन तजुं व्याध ॥१२॥

जग आवन सुफला होये.

तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।

अन्तरगत करूँ आरती,

भव दुस्तर तर जाऊँ ॥१३॥

अन्धमत मूढा नित प्रति,

तेरे चरणी करे पुकार।

"मंगत" माँगे दीनता,

सत धर्म सुख सार ॥१४॥

समता मंगल

समता धर्म हृदय रसे,

विष ममता होवे नाश ।

सत स्वरूप परमात्मा,

जल थल पाऊँ परकाश ॥१॥

सब जीवों से प्रेम हो,

तन मन सेवा धार ।

समता साधन पायके,

नित परसां जय जयकार ॥२॥

सत कर्म सत निश्चय,

निर्मल पाऊँ विचार।

"मंगत" समता धार के,

जीत चलो संसार ॥३॥

अरदास

ब्रह्म सत्यम् सरबधार,

करो अरदास पावें जैकार।

पुरख अनादि नित सम परकाश,

सरब जियां में करे निवास।

सब साजन मिल प्रेम से गाईयो,

अलख आपार मन माहीं ध्याईयों।

नित आदेस नित प्रीत कमाओ,

रख विश्वास अभय पद पाओ।

अजर अमर शकत निर्वानी,

नित आनन्द परम सुख खानी।

जो जन प्रीत से नाम ध्याये,

संकट नास परम गत पाये।

अतुल शक्त सरब का स्वामी,

सरब ज्ञाता सो पार गरामी।

साध संगत मिल शब्द ध्याओ,

पूर मनोरथ निज रूप समाओ।

सरब व्यापक सरब अतीता,

तीन काल सो रहे पुनीता।

घट घट की सब बनत बनाये,

अपरम अपार पुरख अगाहे।

नेहचल बुद्धि तत्त ज्ञान विचारो

सत प्रकाश जोत निरधारो।

करता हरता सरब सुख दानी,

ब्रह्म सत्यम जप पद निर्वानी।

सूक्ष्म अस्थूल इक सूत परोई,

सरब आधार शक्त नित सोई।

मन पुनीत मुख बोल पुनीता,

अखैय शब्द नित जाप जगदीशा।

करो प्रणाम तिस पुरख के चरना,

नित रखयक प्रभ कारन करना ।

पल पल घड़ी जप नाम सुख रासी,

भाव भगत ले मिटे चौरासी ।।

श्लोक

पूरन पुरख को बन्धिये नित धर निर्मल चीत ।

"मंगत" अरदास बखानिये रख सतगुरु की परतीत ।।

पवितर जीवन

भवसागर के तरन को निर्मल करें विचार।

सत संगत सत सीख को निश्चय मन में धार॥

सत पढिये सत सुनिये सत कीजे निध्यास।

एह बिंध जतना जो धरे, तिस मन हो परगास।

मारग सेहज कल्यान के सकले दिये बताये।

"मगत' जो साधे नित प्रेम से सो निश्चय तर जाय॥